अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति
(International Politics)
B.A Part II - 2nd Paper

Dr. Raju Mochi
Deptt of Pol-Science
D.K. College Dumraon
Date - 08/05/2020

अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति, राजनीति विज्ञान का वह विचारधारा है जिसके अन्तर्गत विभिन्न राज्यों के बीच सम्बन्धों को घनिष्ठता स्थापित करने तथा विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के हितों को दृष्टिगत रखने से संबंधित बातों पर विचार किया जाता है। अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति एक ऐसी राजनीति का नाम है जिसके द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि विश्व जगत में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से किस प्रकार का संबंध स्थापित करेगा, वह अपनी विदेश नीति को क्या रूप प्रदान करेगा तथा किन उद्देश्यों को अपने व्यवहार हेतु प्रेरणा बनायेगा ताकि विश्व स्तर पर उसकी छवि अन्य राष्ट्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें।

अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति का अर्थ (Meaning of International Politics) :- राजनीति शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'पालिटिक्स' (Politics) का पर्याय है। जिसका अर्थ शक्ति अर्जित करने के लिए किया गया संघर्ष है। जब सामान्य हित के वर्ग गुटों से टकराते है तब एक विशेष प्रकार के व्यवहार का उदय होता है। इसी व्यवहार को राजनीति की संज्ञा प्रदान की जाती है।

अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति की परिभाषा :- अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति की परिभाषा पर विद्वानों का एक मत नहीं होने के कारण कठिन कार्य प्रतीत होता है। फिर भी विभिन्न विद्वानों ने अपनी परिभाषा को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट किया है।

एच० जे० मॉरगेंथाउ (H.J. Morgenthau) के अनुसार :- "राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष तथा उसका प्रयोग अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति कहलाता है।"

Morgenthau ने पुनः कहा है कि, "अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति, समस्त राजनीतियों के समान, शक्ति के लिए संघर्ष का ही नाम है। अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति के जो कुछ भी उद्देश्य हो, लेकिन उसका तात्कालिक उद्देश्य सदा शक्ति अर्जित करना ही होता है।"

कैनेथ डब्ल्यू० थॉम्पसन (Kenneth W. Thompson) के अनुसार :- "राष्ट्रों के मध्य छिड़ी स्पर्द्धा के साथ-साथ उनके आपसी संबंधों को सुधारने या बिगाड़ने वाली परिस्थितियों एवं संस्थाओं का अध्ययन अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति है।"

जे० डब्ल्यू बर्टन (J.W. BURTON) के अनुसार "अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में अन्य वा[illegible] के अतिरिक्त वे सभी घटनाएँ और परिस्थितियाँ भी सम्मिलित है जिसका प्रभाव

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

एक से अधिक राज्यों पर पड़ता है।

प्रकृति तथा क्षेत्र (Nature and Scope) :- 20वीं शदी के शुरुआती दौर से विभिन्न राष्ट्रों के बीच अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का विकास बहुत तेजी से हो रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तीव्रता में वृद्धि आयी, उसका कारण था साम्राज्यवाद के किले का ढह जाना और नवीन राष्ट्रों का उदय होना। रूस और अमेरिका के नेतृत्व में राष्ट्रों की गुटबन्दी एवं तीसरे गुट का निर्माण, अर्थात् गुट निरपेक्ष देशों का गुट भी एक महत्वपूर्ण तत्व था। संसार के विभिन्न राष्ट्र अपने हितों की पूर्ति के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा और संघर्ष करते रहते हैं तथा शक्ति का सहारा लेकर पूरा करते हैं। चाहे उसके लिए जो नीति अपनानी पड़े। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वह प्रक्रिया बन जाती है, जिसके माध्यम से कोई राष्ट्र समूह अपने आपसी सम्बन्धों को शक्ति के माध्यम से अपने पक्ष में रखने का प्रयास करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन अत्यन्त अस्पष्ट है, क्योंकि इनकी सीमा बाँधना गले में खतरे की घंटी बाँधना है। अनेक विद्वानों के मतों के सहारा लेने के बाद भी हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का कोई क्षेत्र अन्तिम अथवा पूर्ण सत्य होकर सिद्ध नहीं कर सकते। अतः समयानुसार परिवर्तन जरूरी है।

क्षेत्र (Scope) :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक और परिवर्तनशील है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र अध्ययन के लिए उन विषयों का अध्ययन करना आवश्यक है जिन्हें दूसरे क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है, वे निम्नलिखित हैं।

(i) शक्ति का अध्ययन :- (Study of Power) :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जितना अधिक बल शक्ति पर दिया जाता है उतना शायद किसी अन्य विषय पर नहीं दिया जाता। विश्व के सारे राष्ट्र शक्ति प्रदर्शन के होड़ में शामिल होने के लिए विध्वंशकारी तकनीकों पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं, चाहे वह अणु बम हो, परमाणु बम हो या वर्तमान समय में प्रचलित विषाणु बम हो। शक्ति का अध्ययन ही अपनी पहचान समझते हैं।

(ii) संस्थाओं का अध्ययन (Study of Institutions) :- राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मुख्य विषय है। संयुक्त राष्ट्र ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के क्षेत्र में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। आज संयुक्त राष्ट्र के अलावा अनेक क्षेत्रीय संगठनों की स्थापना हो गई है, जिसने संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अन्तर्गत संस्थाओं के अध्ययन का क्षेत्र अधिक है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(iii) **राष्ट्रीय-चरित्र (National character)** :- राष्ट्रों की विदेश नीतियाँ उनके राष्ट्रीय हित पर आधारित है, परन्तु विदेश नीति निर्माण में संबंधित देशों के लोगों के चरित्र का बड़ा योगदान होता है। भारत का चरित्र शांतिप्रिय तो पाकिस्तान और चीन का चरित्र जगजाहिर है। वर्तमान में चीन का चरित्र तो पूरा विश्व देख ही रहा है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के रंग मंच पर राष्ट्रों की भूमिका बड़े पैमाने पर उनके चरित्र के द्वारा निश्चित होती है, जिसका अध्ययन विश्व समुदाय के लिए जरूरी है।

(iv) **युद्ध एवं शान्ति (War and peace)** :- कुछ राष्ट्रों ने युद्ध एवं शांति के अध्ययन को ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विषय माना है। वर्तमान समय में विध्वंसकारी तकनीकि उपकरणों की होड़ चुनौती के रूप में खड़ा कर दिया है। युद्ध एवं शांति की विभाजक रेखा आज काफी बारीक हो गई है। जिसके कारण युद्ध की परंपरा ने शीतयुद्ध और आतंकवाद ने निःसंदेह एक नया अध्याय जोड़ रहा है।

(v) **अन्तर्राष्ट्रीय कानून (International law)** :- अन्तर्राष्ट्रीय कानून, युद्ध और कानून दोनों से संबंधित है इसलिए खींची गई परिधि में स्वतः शामिल है। अन्तर्राष्ट्रीय कानून युद्ध को मानवीय बनाने का प्रयास करता है लेकिन दोनों न्याय संगत नहीं है। अतः राष्ट्रों के बीच पारस्परिक संबंधों के परिचालन में अन्तर्राष्ट्रीय कानून की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय कानून के न्यायसंगत पहलुओं को कुछ राष्ट्र मुँह देखकर अपनी नीति को बदल देते हैं। अतः उचित न्याय का पालन करके ही कानून को जिंदा रखा जा सकता है।

(vi) **राजनयिक संबंध (Diplomatic relations)** :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्रान्तर्गत राजनयिक सम्बन्धों का प्रबल अध्ययन जरूरी है। एक देश अपने सीमा क्षेत्र से बाहर अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को जब स्थापित करता है तब उसे हम राजनयिक संबंध कहते हैं। राजनयिक संबंधों के बिना आज कोई भी राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(VII) नई एवं पुरानी समस्याओं का समाधान (Solution of new and old Problem) :- अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय पूरे विश्व का आधार स्तंभ है। आधार स्तंभ को अपना आधार कायम रखने के लिए विश्व समुदाय के बीच नई-पुरानी समस्याओं का समाधान कर शांति का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए और अपनी कीर्ति पर कुठाराघात होने से बचाना चाहिए।

(VIII) युद्ध विराम (Prevent wars) :- अन्तर्राष्ट्रीय संबंध को मजबूती प्रदान करने के लिए, युद्धों को रोकने के लिए कठोर नीति अपनानी चाहिए। क्योंकि युद्धों के चलते ही अन्तर्राष्ट्रीय शांति भंग होती है। अतः युद्धों के कारण एवं उनको रोकने के उपायों का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

निष्कर्ष (Conclusion) :- निष्कर्षतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन क्षेत्र काफी व्यापक है। इसमें वे सारे राजनीतिक संबंध आते हैं, जिन्हें एक राज्य अपनी सीमाओं के बाहर दूसरे राज्यों से स्थापित करता है। यह संबंध राष्ट्रीय हितों के चलते ही उत्पन्न होते हैं जिन्हें शक्ति द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इसके साथ ही साथ संचालन के यंत्रों, राष्ट्रों के पारस्परिक संबंधों के नियमन और नियंत्रण की विधियों तथा इनके परिवर्तनशील तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

(समाप्त)

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA